लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका लेखापरीक्षा ज्ञानोदय

नौवां संस्करण

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स

बांद्रा(पूर्व), मुंबई - 400 051

फैक्स-02226573814 ई-मेल pdcamumbai@cag.gov.in

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री सी एम साने - महानिदेशक

संरक्षक

श्री अविनाश जाधव - निदेशक

संपादक-मंडल

श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती मीना देशप्रभु	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती विद्या मुरलीधरन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती कल्पना असगेकर	पर्यवेक्षक
श्री आनंद कुमार सिंह	कनिष्ठ अनुवादक

(रचनाओं की मौलिकता एवं विचार से संबंधित पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है- संपादक-मंडल)

अनुक्रमणिका

संदेश	श्री सी एम साने, महानिदेशक
संदेश	श्री अविनाश जाधव, निदेशक
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उपनिदेशक
संपादकीय	श्री आनंद कुमार सिंह
पर्यावरण	श्रीमती राजेश्वरी राजू
आसाम तथा मेघालय पर्यटन	श्रीमती कल्याणी वेदपाठक
हँसी: एक वरदान	श्रीमती अक्षता पावड़े
ज़िन्दगी एक सफ़र है सुहाना	
उत्तरवाहिनी नर्मदा परिक्रमा (परिभ्रमण)	श्रीमती अनु गोडिक
राजभाषा हिंदी की आत्मकथा	श्री आनंद कुमार सिंह
इस्लाम धर्म में ज़कात का महत्व	श्री इमरान खाटीक
क्या जाता है साथ में	श्री शरद धनगर
महंगाई	
कंप्यूटर का महत्व	श्री हरीश कुमार
आपके पत्र	
राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य	

संदेश

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि राजभाषा के विकास में योगदान के लिए कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के नौवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य को बहुत ही रुचिकर ढंग से पूरा करती है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु यह अंक समर्पित है।

राजभाषा हिंदी में कार्य करते हुए इसके विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। हिंदी को सरल एवं प्रचलित शब्दों के प्रयोग से विकसित करने हेतु यथासंभव प्रयास करना चाहिए। आवश्यकतानुसार प्रचलित शब्दों के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए। केंद्र सरकार के कार्मिकों का यह दायित्व है कि वे राजभाषा हिंदी के विकास हेतु यथासंभव सहयोग करें जिससे राजभाषा के विकास को उचित स्तर प्राप्त हो।

पत्रिका के नौवें अंक को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद। रचनाकारों से प्राप्त रचनाओं को पत्रिका में शामिल करते हुए सुंदर प्रस्तुतीकरण हेतु संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

आशा करता हूँ कि हम सभी राजभाषा हिंदी के विकास हेतु अपना यथासंभव योगदान देते हुए इसके प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रयास करते रहेंगे।

(सी एम साने)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रगति हेतु प्रयास स्वरूप कार्यालय की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के नौवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के विकास में पत्रिकाएं अपनी भूमिका बहुत ही अच्छे तरीके से निभा रही हैं। पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाते हुए कार्मिकों की हिंदी में लेखन-क्षमता को बढ़ाने का कार्य करती है।

हिंदी भारत की राजभाषा है। इसलिए केंद्र सरकार के कार्मिकों का यह दायित्व है कि वे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने हेतु प्रयास करें। इस क्षेत्र में किए गए प्रयास सराहनीय है लेकिन अभी प्रयासों को जारी रखने की आवश्यकता है। राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। विकसित शब्दावलियों ने राजभाषा में कार्य को आसान करने का प्रयास किया है। हम सभी के संयुक्त प्रयासों के फलस्वरूप आज राजभाषा का प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है।

पत्रिका के नौवें अंक के प्रकाशन को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी कार्मिकों को धन्यवाद तथा रचनाकारों से प्राप्त रचनाओं को उचित रूप में प्रस्तुत करने हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मै यह आशा करता हूँ कि पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का नौवां अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्रम में अपना योगदान देते हुए प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के अपने उद्देश्य को सार्थक सिद्ध करे।

(अविनाश जाधव)

निदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के नौवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के अपने उद्देश्य के प्रति सतत प्रयत्नशील है। कार्यालय के कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु पत्रिका की भूमिका अत्यंत प्रशंसनीय है। कार्यालय द्वारा निरंतर किया जा रहा प्रयास सराहनीय है। आशा करता हूँ कि सर्वदा यह प्रयास जारी रहेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अनुपम जाखड़)

उपनिदेशक

उपनिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

उप-कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संपादकीय

कार्यालय की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठ संस्करणों के सफल प्रकाशन के पश्चात पत्रिका का नौवां संस्करण आप सभी के समक्ष सादर प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों को अपनी लेखनी के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती है। राजभाषा के कार्यान्वयन को बढ़ावा देने हेतु कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा पत्रिका में शामिल करने हेतु प्रस्तुत रचनाएं सम्मिलित की गई हैं। सम्मिलित रचनाओं में रचनाकारों ने शब्दों के साथ-साथ भावों की सुंदर अभिव्यक्ति प्रस्तुत किया है।

कार्मिकों द्वारा कार्यालय के कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाकर राजभाषा हिंदी के संवैधानिक उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु प्रयास किया जा सकता है। हिंदी को वैज्ञानिक भाषा माना जाता है। हिंदी को उच्चारण के अनुसार ही लिखा जाता है। समय के साथ-साथ राजभाषा हिंदी की लोकप्रियता बढ़ रही है तथा आवश्यकताओं के अनुसार बड़े स्तर पर ग्रहण की जा रही है। कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन को आधार माना गया है। सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कई प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं। राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रयोग को सरल बनाने के लिए विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध है। प्रौद्योगिकी के प्रयोग से राजभाषा का विकास तेजी से हो रहा है। कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक तथा हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से अधिकारियों तथा कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

पत्रिका के नौवें संस्करण को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक धन्यवाद तथा हमें यह विश्वास है कि आगामी संस्करणों के लिए आप सभी का सहयोग प्राप्त होगा। हम आशा करते है कि पत्रिका का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। आपसे अनुरोध है कि पत्रिका पढ़ने के पश्चात प्रोत्साहित करने के लिए अपने बहुमूल्य विचारों से हमें अवगत कराएं।

आनंद कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती राजेश्वरी राजू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पर्यावरण

पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए पर्यावरण प्रकृति की अमूल्य देन है। जल, वायु, वृक्ष आदि पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। हम सभी ने हमेशा पर्यावरण के संसाधनों का उपयोग किया है। पर्यावरण के अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमें भविष्य में जीवन बचाने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। यह पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह पर्यावरण का ध्यान रखें। विश्व पर्यावरण दिवस प्रत्येक वर्ष 5 जून को मनाया जाता है।

पर्यावरण का महत्व: हम सभी के जीवन में जिस तरह की तकनीक का उदय हुआ है, वह दिन प्रतिदिन जीवन की संभावना को खतरे में डाल रहा है और पर्यावरण को नष्ट कर रहा है। प्राकृतिक हवा, पानी और मिट्टी प्रदूषित हो रही है और ऐसा लगता है कि यह एक दिन हमें बहुत नुकसान पहुंचा सकता है। यहां तक कि यह मनुष्यों, जानवरों, पेड़ों और अन्य जैविक जीवों पर भी अपना बुरा प्रभाव दिखाना शुरू कर देता है। कृत्रिम रूप से तैयार खाद का उपयोग और हानिकारक रसायन मिट्टी की उर्वरता को नष्ट कर देते हैं और दैनिक भोजन के माध्यम से हमारे शरीर में जमा हो जाते हैं। औद्योगिक कंपनियों से निकलने वाला हानिकारक धुआं हमारी प्राकृतिक हवा को दूषित करता है, जो हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, क्योंकि हम इसे हमेशा सांस के माध्यम से अंदर लेते हैं।

पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी: प्रदूषण में वृद्धि प्राकृतिक संसाधनों के तेजी से घटने का मुख्य कारण है, इसने न केवल वन्यजीवों और पेड़ों को नुकसान पहुंचाया है, बल्कि उनके द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र को भी बाधित किया है। आधुनिक जीवन की इस व्यस्तता में हमें कुछ बुरी आदतों को बदलने की जरूरत है, जो हम दैनिक जीवन में करते हैं। यह सच है कि बिगड़ते पर्यावरण के लिए हमारे द्वारा किया गया एक छोटा सा प्रयास एक बड़ा सकारात्मक बदलाव ला सकता है। हमें अपने स्वार्थ और विनाशकारी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

****

श्रीमती कल्याणी वेदपाठक

पर्यवेक्षक

आसाम तथा मेघालय पर्यटन

भारत देश विभिन्न राज्यों के कारण एक विविध संस्कृतियों का देश है। हर एक राज्य अपनी प्राकृतिक सुंदरता, संस्कृति, कला और जलवायु के कारण अपने आप में बहुत विशेष है। भारतीय होने के नाते मुझे इन राज्यों का सफर करना अच्छा लगता है। हमने इस साल एक नहीं बल्कि दो सुन्दर राज्यों का सफर करने की योजना बनाई, एक आसाम और दूसरा मेघालय। हमारा यह सफर अंग्रेजी 'suffer' न बने, इसके लिए हमने एक ट्रवेल एजेंट को चुना ताकि हर एक चीजों का इंतजाम आसानी से हो सके। इसका एक और फायदा यह होता है कि नए लोगों की पहचान होती है क्योंकि बहुत सारे दूसरे लोग इस ट्रेवल एजेंट के साथ टूर के लिए आते है। इस कारण पर्यटन का आनंद दुगना होता है।

इस तरह से ट्रवेल एजेंट के माध्यम से हमने हमारी यात्रा 10 अप्रैल 2022 से प्रारंभ किया। सबसे पहले हम हवाई जहाज से मुंबई से सुबह 8 बजे गुवाहाटी पहुंचे। गुवाहाटी में हम नाश्ता करके ब्रह्मपुत्र नदी पर केबल राइड के लिए पहुँच गए। केबल की सवारी चमत्कारी और रोमांचकारी था। ऊपर से दिखने वाला नजारा सुंदर था, नीचे एक द्वीप था, जिस पर शिवजी का उमानंद मंदिर है। इसके बाद हम शालकुची गांव गए जहां आसाम साड़ी बुनाई की प्रक्रिया देखी गई। आसाम सिल्क साड़ी को मुख्य रूप से मूगा सिल्क और इरा सिल्क के नाम से जाना जाता है, इस साड़ी की बुनाई हाथों से की जाती है और बुनाई में लगभग 40 दिन लगते है। इस वजह से यह साड़ी काफी कीमती होती है।

दूसरे दिन (11 अप्रैल)- सुबह आसाम की श्री कामाख्या देवी माँ के दर्शन के लिए मंदिर पहुंचे, दर्शन करके उनका आशीर्वाद लेकर हम आगे मेघालय प्रवास के लिए निकल पड़े। मेघालय पूर्वोत्तर भारत के सबसे सुंदर पहाड़ी राज्यों में से एक है और शिलांग उसकी राजधानी है। आसाम से मेघालय का प्रवास काफी लंबा था लेकिन आह्लाददाई था। रास्ते में हरी-भरी वादियों के साथ हवादार सड़कें, बादलों से ढकी पहाड़ियों का नयनरम्य दृश्य मनोहर था। घंटों के भीतर बादलों से धुंधले से धूप तक बदलते मौसम को महसूस करना सड़क यात्रा के लिए अविस्मरणीय अनुभव था। रास्ते में हमने उमियम झील को देखा जो बड़ा ही सुंदर है जिसके दोनों तरफ हरियाली है। मेघालय एक जादुई भूमि है जो कई प्राकृतिक चमत्कारों से भरी हुई

है, फलों, फूलों सब्जियां, मसालों और औषधीय पोंधों की विविधता यहाँ पायी जाती है। मेघालय के शिलांग शहर में हम करीब शाम के पांच बजे तक पहुँच गए, हमारे ठहरने का स्थान शिलांग के प्रमुख स्थान 'पुलिस बाजार' में एक होटल में था। पुलिस बाजार की चमक-दमक और स्फूर्तिलापन ऐसा था कि इतना सफर करने के बाद भी सभी लोग जलपान करके उत्साहित होकर बाजार देखने के लिए चले गए, खरीदारी के मामले में महिलाओं का उत्साह तो हमेंशा से ही बरकरार होता है।

शिलांग में हमें दो रात और तीन दिन के लिए रुकना था। दूसरे दिन हम मावलिनोंग गाँव जाने के लिए बस में बैठ गए। मावलिनोंग गाँव, एशिया का सबसे बेहतरीन, सुन्दर और साफ़ सुथरा गाँव है जहाँ पर प्रकृति को अहम् महत्व दिया गया है। गाँव के सदस्य पर्यावरण की सुरक्षा में जुटे रहते है। कहीं पर भी गन्दगी नहीं दिखाई देती है। वहाँ पर हर जगह महिलाए ही कार्यरत होती है, सभी काम में महिलाएं आगे होती है। वहां के होटल, बाजार, दुकानो में ज्यादातर महिलाए कार्यरत होती है।

तीसरे दिन (12 अप्रैल)- मावलिनोंग जाते समय हमने जीवित जड़ों से बना एक पुल देखा, मेघालय में ऐसे कई प्राकृतिक जड़ से बने पुल है जो मनुष्यों और प्रकृति के बीच के संबंध के प्रतीक के रूप में दिखाई देते हैं। इसका श्रेय वहां के सुयोग्य 'खासी' और 'जयंतिया' जनजातीय समुदायों को जाता है। जीवित जड़ों से बना पुल, उसके नीचे से बहता झरना और पुल को पार करते हुए नीचे जाकर पानी में पैर भिगोना यह अनुभव बेहद ही सुखदायी था। प्रकृति के करीब भरपूर मात्रा में ऑक्सीजन, चारों ओर हरियाली और अप्रैल के माह में दोपहर के वक्त भी सूरज की गर्मी का प्रकोप न होना यह प्रकृति की महत्ता नहीं तो और क्या है? रास्ते में स्थानीय जनजातियों द्वारा बिकने वाले वहां के ताजा अननस, शितुत का स्वाद लेकर हमने सफर का मजा दुगना कर दिया। वहां से लौटते वक्त रास्ते में एक काफी बड़ा पत्थर दिखाई दिया जो एक छोटे पत्थर पर टिका था और इस कारण उसे बैलेंसिंग रॉक के नाम से जाना जाता है। फिर हम बस में बैठकर मावलिनोंग गाँव की तरफ आगे बढ़े और थोड़े ही समय में गाँव पहुँच गए, हमारी बसें गांव के बाहर रुक गई । गाँव में प्रवेश करने के लिए हमें पैदल ही निकलना पड़ा क्योंकि प्रदुषण रोकने के कारण गाँव में पेट्रोल एवं डीजल पर चलने वाले वाहन के लिए पाबंदी है। हमारे दोपहर के भोजन का प्रबंध गाँव में था, मेघालय ऑथेन्टिक भोजन में गाँव के ताजे सब्जियों का प्रयोग किया गया था। इस कारण भोजन में विशेष रूचि थी। भोजन के बाद हमने गाँव की सैर की और वहां पर पेड़ पर बनाया हुआ बांस का ट्री-हाउस देखा, ऊपर ट्री-हाउस में जाकर गाँव का नजारा बहुत प्यारा लग रहा था। यह अनोखा साफ़ सुथरा, फलों-फूलों से हरा भरा गाँव बड़ा ही मन लुभावन था।

मावलिनोंग को अलविदा करके हम नाव की सवारी के लिए दावकी गांव गए। दावकी के लिए सड़क सुडौल और टॉपसी टर्वी है। दावकी से कुछ ही दूरी पर हम पहाड़ियों में एक ऐसी जगह पर पहुंचे जहां से हम बांग्लादेशी मैदानों को देख रहे थे। भारत और बांग्लादेश की सीमा को निहारते हुए दावकी गाँव की ओर आगे बढ़े। दावकी भारत-बांग्लादेश सीमा पर स्थित एक गाँव है जो भारत और बांग्लादेश की सीमा से बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। जयंतिया हिल्स के तल पर मावलिनोंग से होकर दावकी में उमंगोट नदी बहती है। नदी का पानी गहरा और हल्का हरा है। नदी का पानी इतना स्पष्ट था कि नदी के अंदर कंकड़ और कुछ मछलियों को नदी में तैरते हुए देख सकते थे।

इस अदभुत नज़ारे को वीडियो और तस्वीरों में लेने का प्रयास किया गया। नदी में नौका विहार ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया, नदी के ऊपर अंग्रेजों द्वारा बनाया गया एक पुल है, मानो वह झुलता पुल उसमे और अधिक सुंदरता जोड़ रहा है। हम लगभग शाम 05 :00 बजे सीमा पर पहुंचे। हमने सीमा पर बी. एस.एफ. के जवानों के साथ बातचीत की और हमने कुछ तस्वीरों को कैमरे में कैद किया।

चौथे दिन (13.04.2022) का हमारा सफर सेंट मेरी कैथेड्रल चर्च से शुरू हुआ, चर्च का परिसर काफी बड़ा और शांतिदायी एवं सुकून से भरा महसूस हुआ। हम वहाँ से चेरापूंजी के लिए निकल पड़े, रास्ते में हमने एलीफैंटा फॉल देखा, यह फॉल तीन स्तर पर देखने को मिलता है तीसरा

स्तर का एलीफैंटा फॉल बहुत बड़ा है। चेरापूंजी खासी हिल्स जिले का उपविभागीय शहर है, इसे सोहरा के नाम से भी जाना जाता है। चेरापूंजी (wet land) में आकर मेघालय का नाम कैसे समर्पक है उसका अहसास होता है, सच में हम बादलों के घर में प्रवेश करते है ऐसा प्रतीत होता है। सफर के दौरान घाटियां और झरने हमारा मन लुभाते है। घाटियों में 'रोप स्लाइडिंग' एडवेंचर एक अनोखा अनुभव है। युवा पीढ़ी इस तरह की सवारी को करना पसंद करते हैं। दोपहर 01 बजे के करीब हम चेरापूंजी के एक नियोजित होटल में भोजन के लिए पहुँच गए। जैसे ही हम बस से उतर कर होटल में प्रवेश कर रहे थे बड़ी जोरदार वर्षा हुई, मानो वर्षा हमारे स्वागत करने के लिए ही आयी हो। सबसे अधिक बारिश होने वाले शहर के नाम से चेरापूंजी के बारे में किताबों में पढ़ा था, लेकिन वहां की तेज बारिश की साक्षात अनुभूति के बाद तन मन को ठण्डक प्राप्त हुई। भोजन के बाद हम नोहा कालिकाइ फॉल देखने के लिए गए लेकिन बारिश की वजह से वहां पुरे घाटी में सफ़ेद बादलों का कम्बल छा गया था। हम वहां पर बादल तथा कोहरा छटने का इंतज़ार कर रहे थे, कोहरे और बादल के कारण वाटर फॉल का नजारा देखना मुश्किल था। ऊपर से पानी गिरने की आवाज सुनाई दे रही थी। करीब 10 मिनट के इंतज़ार के बाद वाटर फॉल का नयनरम्य दृश्य आखों के सामने आ गया।

उसके बाद हमने 'सेवन सिस्टर' वाटर फॉल देखा। 'सेवन सिस्टर' वाटर फॉल के बाद, हम प्रकृति द्वारा बनाई गई मावस्मई नामक गुफा में गए। गुफा में प्रवेश करने का हमारा पहला अनुभव अद्भुत और साहसिक था। गुफा के अंदर की चट्टानें ऊपर - नीचे हैं, एक जगह पर गुफा के अंदर का रास्ता संकीर्ण था इसलिए हमें रेंगते हुए जाना पड़ा। ऊपर की चट्टानें शंकु के आकार की और कलात्मक थीं और ऊपरी ओर से पानी की बूंदें गिर रही थीं। लगातार पानी की बूंदों के कारण चट्टान के विभिन्न आकार बन गए हैं।

पांचवें दिन (14 अप्रैल) - शिलांग से काजीरंगा तक हमारी यात्रा शुरू हुई, एक बार फिर यह एक लंबी यात्रा करके हम काजीरंगा शाम के 5.00 बजे तक एक होटल में पहुंचे। उस दिन आसामवासियों का नया वर्ष होने के कारण हर जगह हर्ष-उल्लास के साथ बिहू की तैयारी चालु थी। बैसाख माह के बिहू को रोंगाली बिहू कहते है, हम जिस होटल में रुके थे वहां हमारे लिए बिहू उत्सव की जानकारी देते हुए सामूहिक नृत्य का आयोजन किया था, हम सभी ने शामिल होकर त्यौहार का खूब आनंद उठाया।

छठवाँ दिन - (15 अप्रैल) सुबह हम चाय बागान गए और पास ही में आसाम के स्थानीय बाजार से उनके कला और संस्कृति से संबंधित वस्तुओं की खरीदारी की। दोपहर में आसाम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान जाने हेतु जीप सफारी की जो बहुत ही शानदार थी। आसाम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में एक सींग वाले गैंडे पाए जाते है। एक सिंगी गैंडे के साथ हाथियों का झुंड, हरिण, जंगली भैस और अन्य पक्षी जीवन भी देखने को मिला।

सातवां दिन (16 अप्रैल) - काज़ीरंगा के नजदीक ही ऑर्चिड पार्क था, शनिवार के दिन हमने उस पार्क में विभिन्न प्रकार के ऑर्चिड की प्रजातियों को देखा, वहाँ के गाइड द्वारा उसके बारे में बहुत सुन्दर जानकारी मिली। उसी के बगल में आसाम का म्यूजियम भी था, जिसमे आसाम के लोगों के रहन सहन, तौर तरीके, भाषा, विविध जनजाति, कला, संस्कृति, भौगोलिक रचना के बारे में जानकारी मिली। जो गाइड यह जानकारी दे रहा था उसके बोलने का अंदाज आसाम के प्रति आदरभाव बहुत सम्मानपूर्ण था। उसी दिन शाम को गुवाहाटी की ओर जाने के लिए प्रवास शुरू हुआ, रास्ते में फिर से आसामी साड़ी/कुर्ती खरीदने के लिए एक जगह पर बस रुक गई और लोगो ने अपने तथा अपने प्रियजनों के लिए खरीदारी की। उस दिन शाम को ब्रह्मपुत्र नदी पर क्रूज़ की सवारी के लिए गए, वहाँ पर नदी के सैर के साथ लाइव ऑर्केस्ट्रा था, खूब धमाल मस्ती, नाच गाने के साथ वह शाम रंगीन और यादगार बनकर रह गयी। उस रात हम गुवाहाटी के एक होटल में रुके ताकि दूसरे दिन फ्लाइट पकड़ना आसान हो।

आठवां दिन (17 अप्रैल)- सफर के इन यादगार पलों को साथ में लेकर हम सब सैलानी सुबह जलपान/नाश्ता करके अपना सामान लेकर वापस मुंबई जाने के लिए गुवाहाटी हवाई अड्डे के लिए प्रस्थान कर गए।

****

श्रीमती अक्षता पावड़े
सहायक पर्यवेक्षक

हँसी: एक वरदान

हाल ही में कोविड के 2 साल में सभी लोग जब डर गए थे और घरों मे बंद थे उस समय लोग टेलीविज़न पर न्यूज़ चैनल की जगह ज्यादातर कॉमेडी शो देख रहे थे और डर थोड़ा कम कर रहे थे। आजकल के भाग-दौड़ के युग में जीवन में हँसी का बहुत महत्त्व है। इसीलिए ज्यादातर मनोरंजन चैनल पर रात के समय कॉमेडी शो दिखाए जाते है, जो एक बहुत ही अच्छी तरह से तनाव दूर करते हैं।

हँसी एक प्राकृतिक दर्द निवारक है, हँसने के दौरान हमारे शरीर में दर्द निवारक एंडोफिरन नामक हार्मोन निकलता है, जो चिंता, डिप्रेशन, बदन दर्द, माँसपेशियों का दर्द दूर करता है।

इसके साथ ही यह एक अच्छा व्यायाम भी है, जिससे पेट, श्वसन प्रणाली एवं चेहरे की माँसपेशियों का अच्छा व्यायाम होता है, फेफडों को कसरत मिलती है और शरीर में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। हँसने से चेहरे की 15 माँसपेशियां एक साथ काम करती है और सुंदरता बढ़ती है। सुन्दर व्यक्ति बिना हँसी के बदसूरत लगता है और बदसूरत व्यक्ति हँसी के कारण सुन्दर लगता है। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है और सामने वाले पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। सभी लोग हँसने वाले लोंगों को ज्यादा पसंद करते है क्योंकि सामने वाले के चेहरे की हँसी उनके चेहरे पर मुस्कान लाती है।

डॉक्टर के अनुसार सेहतमंद रहने के लिए संतुलित भोजन, मन की शांति और खुलकर हँसी बहुत जरुरी है। इसलिए बहुत से बग़ीचों में सुबह-सुबह लाफ्टर क्लब चलाये जाते हैं तथा साल में मई माह के पहले रविवार को वर्ल्ड लाफ्टर दिन मनाया जाता है। इस मौके पर कुछ What's App चुटकुले खास आपके लिए प्रस्तुत है ।

1) एक आदमी ज्योतिष से बोला
'मेरी शादी क्यों नहीं हो रही है'
ज्योतिष बोले, ' कैसे होगी पगले,
तुम्हारी कुन्डली में सुख ही सुख जो लिखा है'

2) अरे बेटा ये पैर पर पट्टी क्यों बंधी है।

कुछ नहीं अंकल बाइक पर से गिर गया।
ओह, बेटा कुछ दवा दारू ले लेना,
हाँ अंकल, दारू गिरने से पहले ली थी,
दवा गिरने के बाद ले ली है।

3) जब मैं कॉलेज में था तब एक सुन्दर लड़की
हमेशा मुझसे ही होमवर्क करवाती थी।
इसलिए सब लड़के मुझ से जलते थे,
और मैं बहुत खुश होता था।
अब वही लड़की मेरी बीवी है,
और आज भी सारा होमवर्क मुझसे ही करवाती है ,
अब सारी औरतें उससे जलती हैं और
वो खुश होती है।

4) शांति उसी घर में रहती है,
जहाँ पति-पत्नी दोनों मोबाइल चलाते हैं;
यही है सुखी जीवन का राज ।

5) हिंदी में चरण की व्याख्या
छू लो तो चरण
अड़ा दो तो टांग
धस जाये तो पैर
फिसल जाये तो पांव
आगे बढ़ाना हो तो कदम
प्रभु के हो तो पाद
बाप की हो तो लात
गधे की पड़े तो दुलत्ती
घुंघरू बांध दो तो पग
खेलने के लिए लंगड़ी
और अंग्रेजी में सिर्फ LEG

****

श्रीमती अक्षता पावड़े
सहायक पर्यवेक्षक

ज़िन्दगी एक सफ़र है सुहाना

"ज़िन्दगी एक सफ़र है सुहाना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना हो

ज़िन्दगी एक सफ़र है सुहाना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना"

जब मैं छोटी थी, हमेशा सोचती थी जिंदगी, जीवन का मतलब क्या है

दोंस्तों से, माता पिता जी से पूछा लेकिन उनके जवाब से तसल्ली नहीं हुई ।

(तब गूगल नहीं था.....)

अब उम्र के 45 साल गुजरने के बाद जिंदगी का असली मतलब पता चला है,

और इस गाने का अर्थ समझ आ रहा है, धन्य है उस जमाने के गीतकार

कितने अर्थपूर्ण गीत लिखते थे ।

"चाँद तारों से चलना है आगे असमानों से बढ़ना है

आगे पीछे रह जायेगा ये ज़माना"

आजकल तो 2-3 साल की उम्र से ही जिंदगी की रेस में हम सब लगे है और अपने बच्चों को भी उसी का एक भाग बना रहे है, जो पीछे रह गया वो हार गया ।

खुद के अलग से सपने देखकर हमें बढ़ना है आगे ।

"हँसते गाते जहाँ से गुज़र दुनिया की तू परवाह ना कर

मुस्कुराते हुए दिन बिताना यहाँ कल क्या हो किसने जाना"

हम हमेशा सोचते रहते है मैंने ऐसा किया तो लोग क्या कहेंगे

मैंने वैसा किया तो लोग क्या कहेंगे, लोग तो कैसा भी करो

उनका काम ही है कुछ तो कहना।

उनके बारे में सोचकर हम अपने मन को ही भूल जाते है ।

दुनिया की इस रेस में हम सब खिलखिलाकर मुस्कुराना भूल गये है ।

"मौत आनी है आएगी एक दिन जान जानी है जाएगी एक दिन

ऐसी बातों से क्या घबराना यहाँ कल क्या हो किसने जाना"

हम हमेशा जिंदगी में बहुत सपने देखते है और उनके पीछे भागते हैं।

लेकिन जिंदगी का एक कड़वा सच है मौत। किसको, कब और कहाँ आ जाये

पता ही नहीं चलता है।

जब तक है जान हम सोचते है मैं यह करूंगा, मैं वो करूँगा, मुझे ये चाहिए, मुझे वो चाहिए लेकिन मौत का अंतिम सच हमें बताता है कि जिन्दगी में कल का क्या अगले पल का भी भरोसा नहीं है।

हाल ही में कोविड के दौरान सभी को पता चला अपनी और अपनों की जान है तो जहाँ है।

"ज़िन्दगी एक सफ़र है सुहाना यहाँ कल क्या हो किसने जाना

ज़िन्दगी एक सफ़र है सुहाना यहाँ कल क्या हो किसने जाना"

इसलिए इस जिंदगी को हर पल मस्ती मजाक छोटे-छोटे पल का आनंद लेकर जीना है, कभी सोचना नहीं कि मैं ऐसा होने पर ये करूँगा या वो करूँगा, आज में जीवन जिए, ज्यादा भूतकाल एवं भविष्य की चिंता ना करें।

क्योंकि जब तक हमारा सपना पूरा हो किसको पता तब तक हमने क्या खो दिया हो।

क्योंकि यहाँ कल क्या, अगले पल क्या होगा किसने जाना।

****

श्रीमती अनु गोडिक
सहायक पर्यवेक्षक

उत्तरवाहिनी नर्मदा परिक्रमा (परिभ्रमण)

भारत के उत्तरी ओर हिमालयी और पश्चिमी तटों पर सह्याद्री पर्वत श्रृंखलाओं के कारण, भारत की अधिकांश प्रमुख नदियाँ दक्षिण या पूर्व की ओर बहती हैं, उदाहरण के लिए गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी, कृष्णा आदि। केवल सिंधु और नर्मदा पश्चिम की ओर बहती हैं। 21वें कल्प में गंगा और 31वें कल्प में नर्मदा का अवतरण हुआ। लेकिन गंगा हर कल्प में बाढ़ के समय गायब हो जाती है और एक नए कल्प में पुनर्जन्म लेती है। लेकिन नर्मदा बाढ़ के दौरान भी गायब नहीं होती है, बल्कि बहती रहती है। ऐसा वरदान उन्हें श्री महादेव शंकर ने दिया है। स्कंद पुराण में तो उनके 'रेवाखंड' नाम से एक प्रकरण दर्ज है। इन सभी कविताओं को मिलाकर 'नर्मदा पुराण' नामक ग्रंथ तैयार किया गया है। यह विश्व की एकमात्र नदी है जिसकी परिक्रमा प्राचीन काल से की जाती रही है। और जिसके नाम से एक पुराण है, 'नर्मदा पुराण'। इसके तट पर रावण, इंद्रजीत आदि जैसे शक्तिशाली राक्षसों के साथ-साथ ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि जैसे देवताओं ने कठिन तपस्या की है। इसके तट पर अगस्त्य, वेदव्यास आदि महान मुनियों के आश्रम हैं। नदी का उद्गम अमरकंटक पहाड़ियों से होता है। इस नदी में कभी बाढ़ नहीं आती है और इससे जान-माल का ज्यादा नुकसान नहीं होता है।

यह पढ़कर आपको शायद लगे कि मुझे पौराणिक या धार्मिक कथाओं में खूब दिलचस्पी है। जी नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है, हां लेकिन जब से मैंने नर्मदा पैदल परिक्रमा के बारे में यूट्यूब पर वीडियो देखा तब से मुझे नर्मदा मैया के बारे में जानने में उत्सुकता बढ़ी। नर्मदा मैया का यह इतिहास जानने के बाद तो मैं भी परिक्रमा में निकलू यह मनसा जागी। परंतु सांसारिक

जिम्मेदारियाँ..। फिर पता चला कि रेवामैया यात्रा के दौरान तीन या चार स्थानों पर उत्तर की ओर बहती है। चैत्र के महीने में गुडीपडवा से अमावस्या तक उत्तरी चैनल नर्मदा की परिक्रमा करने की प्रथा है और यह केवल 2-3 दिन में सम्पन्न होती है।

हम एक ट्रेवल्स के साथ 18/04/2022 के उत्तरवाहिनी नर्मदा परिक्रमा के लिये निकल पड़े। हमारे साथ करीब सौं से ज्यादा लोग न केवल महाराष्ट्र बल्कि दुबई और गोवा से भी आये थे। पूरी रात यात्रा करने के बाद हम नर्मदा के दक्षिणी तट पर 19/04/2022 को नीलकंठ धाम पोइचा में स्वामीनारायण मंदिर की धर्मशाला में रुके। 19 और 20 अप्रैल 2022 को हमने नर्मदा के तट पर कुम्भेश्वर महादेव जैसे तीर्थ स्थलों का दौरा किया जहां शनिदेव ने तपस्या की थी। शुलपनेश्वर महादेव, कुबेर भंडारी मंदिर, तिलकवाड़ा में तिलकेश्वर महादेव मंदिर, वासुदेव कुटीर और श्री समर्थ रामदास स्वामी द्वारा स्थापित ज्ञान मारुतीराय। बाद में हमने केवड़िया में श्री सरदार वल्लभभाई पटेल की स्टैच्यू ऑफ यूनिटी को करीब से देखा। शानदार और मनोरम दृश्य। फिर 20/4/22 की रात हम रामपुरा के रणछोड़राय मंदिर आश्रम में रुके।

हम 21/04/2022 को लगभग 2 बजे उठे। सुबह की रस्म पूरी करने के बाद कीड़ों मकोड़े घाट, रामपुरा में सुबह साढ़े तीन बजे नर्मदा में स्नान करना एकदम अनोखा अनुभव था। उसके बाद, हम सबने रणछोड़राय आश्रम, रामपुरा में एक संकल्प उठाया और परिक्रमा शुरू की। सुबह 4 बजे गाँव के रास्तों से, खेतो सें, नदी के किनारो से चलना, एक सुखद अनुभव था। इसके बाद तिलकवाड़ा के उत्तरी तट पर स्थित मंदिर तक पहुंचने के लिए नर्मदा को नाव से पार करना पड़ता है। भीमेश्वर, धर्मेश्वर, युधिष्ठिर तपस्वियों आदि के दर्शन कर हम पुन: रणछोड़राय मंदिर आश्रम पहुंचे और अपना संकल्प पूरा किया।

हर साल लाखों लोग नर्मदा नदी की सैर करते हैं। शास्त्रों के अनुसार तीन साल, तीन महीने और तेरह दिन का चक्र पूरा करते हैं, लेकिन आजकल ज्यादातर लोग चार या पांच महीने में पैदल ही चक्र पूरा करते हैं। परिक्रमा मार्ग में कई आश्रम हैं जो तीर्थयात्रियों को मुफ्त आवास और भोजन प्रदान करते हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग, गरीब, अमीर, मध्यम वर्ग, आदि, परिक्रमा करते हैं, और बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी उम्र के भक्त परिक्रमा में दिखाई देते हैं। आज तक, कई लोगों को इस पैर परिसंचरण में विभिन्न आध्यात्मिक अनुभव हुए हैं। यह सब आस्था का हिस्सा है।

मुझे आध्यात्म में बहुत रुचि हैं, इसलिए मैनें यह परिक्रमा की ऐसा नही है। मैया नर्मदा का इतिहास पढ़कर मन में इस परिक्रमा करने की इच्छा हुई। इसे मैं परिक्रमा नही परिभ्रमण कहूँगी जो जीवन में सबसे अच्छा एक संस्मरणीय अनुभव था।

****

श्री आनंद कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

राजभाषा हिंदी की आत्मकथा

मैं भारत की राजभाषा हिंदी हूँ। मुझे संविधान सभा के द्वारा 14 सितंबर, 1949 को भारत देश के राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। राजभाषा के रूप में मुझे मान्यता प्रदान करने के लिए सदस्यों के बीच एक सार्थक चर्चा हुई तथा सभी पहलुओं पर विचार करने के पश्चात सभा द्वारा मुझे भारत की राजभाषा का स्थान प्रदान करने हेतु स्वीकार किया गया। 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को मनाने के लिए हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा, हिंदी माह आदि का आयोजन किया जाता है।

मुझे 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के पश्चात विकसित करने हेतु संविधान के अनुच्छेद 343 से लेकर 351 तक मुझसे संबंधित व्यवस्था की गई और विकसित करने का दायित्व संघ सरकार को दिया गया। संविधान की धारा 343(1) में मुझे भारतीय संघ की राजभाषा का स्थान प्रदान करते हुए मेरी लिपि देवनागरी तथा प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप (अर्थात 1, 2, 3 आदि) का उल्लेख किया गया है। अनुच्छेद 351 में मेरे विकास के लिए यह उल्लेख किया गया कि "संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे"। इस प्रकार मेरा प्रसार बढ़ाना तथा विकास करना संघ का कर्तव्य है।

मुझे विकसित करने के उद्देश्य से राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अन्तर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से निर्देशों को जारी किया गया है। मुझे विकसित करने की दिशा में प्रयास करते हुए राजभाषा संकल्प, 1968 भारतीय संसद के दोनों सदनों (राज्यसभा और लोकसभा) ने 1968 में 'राजभाषा संकल्प' के नाम से संकल्प लिया।

नगर स्तर पर मेरे विकास को सुनिश्चित करने तथा कार्यान्वयन को उचित दिशा प्रदान करने हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया जाता है। बड़े-बड़े नगरों में जहाँ केंद्रीय सरकार के दस या उससे अधिक कार्यालय हैं, वहाँ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) का गठन किया गया। समिति का गठन राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर भारत सरकार के राजभाषा सचिव द्वारा किया जाता है। इसकी बैठकें वर्ष में दो बार होती हैं। इन बैठकों में नगर में स्थित सभी केंद्रीय सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों तथा बैंकों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। प्रारंभ में ऐसे नगरों की संख्या सीमित थी, अब बढ़ती जा रही है।

मुझे विकसित करने और मेरे प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा समय-समय पर पहल की जाती है। 1950 से लेकर अब तक सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए है। मेरे प्रयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से राजभाषा नियम 1976 बनाया गया तथा वर्ष 1976 में संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया। इस क्रम में वर्ष 1981 में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग का गठन किया गया।

अपनी विकास यात्रा में बहुत से अवसरों पर मुझे गर्व की अनुभूति भी हुई। जब श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी तथा श्री नरसिंह राव जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर हिंदी में संबोधन किया तो उनके वचनों के माध्यम से मैंने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपने प्रभाव को प्रस्तुत किया जो मेरे लिए अत्यंत गौरव का क्षण था।

संयुक्त प्रयासों के फलस्वरूप आज मैं एक समृद्ध स्थिति में हूँ। आज देश-विदेश में मेरा प्रयोग समय के साथ बढ़ता जा रहा है। फिर भी अभी मेरी विकास यात्रा पूर्ण नहीं हुई है। मैं अपनी विकास यात्रा के पथ पर प्रगतिशील हूँ तथा मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं शीघ्र ही अपना यथोचित स्थान प्राप्त करूंगी।

****

हिंदी: हमारी राजभाषा

श्री इमरान खाटीक
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

इस्लाम धर्म में ज़कात का महत्व

ज़कात अरबी भाषा का शब्द है इसका अर्थ होता है पाक या शुद्ध करने वाला। इस्लाम धर्म के पांच मूल स्तंभों(कलमा, नमाज, ज़कात, रोजा, हज) में से ज़कात एक माना जाता है। ज़कात की अदायगी हर मुसलमान को अपने धन में से करना जरूरी है। यह दान धर्म नहीं बल्कि धार्मिक कर या टैक्स माना जाता है और फ़र्ज़ भी है। अपने माल को पाक साफ करने का यह एक अनिवार्य तरीका है।

इस्लाम धर्म में ज़कात उस माल को कहते हैं जिसे इंसान "अल्लाह के दिए हुए माल में से उसके हकदारों के लिए निकालता है"। इस्लामिक शरीयत के मुताबिक हर एक समर्पित मुसलमान को साल में एक बार अपनी आमदनी का 2.5 % हिस्सा ग़रीबों को दान में देना चाहिए। इस दान को ज़कात कहते हैं।

कुरान में ज़कात के बारे में बताया गया है।

"निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी, उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है, और उन्हें न कोई भय हो और न वे शोकाकुल होंगे।"

यूं तो ज़कात पूरे साल में कभी भी दी जा सकती है, लेकिन वित्तीय वर्ष समाप्त होने पर रिटर्न फाइल करने की तरह ज्यादातर लोग रमजान के पूरे महीने में ही ज़कात निकालते हैं। मुसलमान इस महीने में अपनी पूरे साल की कमाई का आकलन करते हैं और उसमें से 2.5 फीसदी दान करते हैं। असल में ईद से पहले यानी रमजान में ज़कात अदा करने की परंपरा है। जिसका मूल कारण गरीबों की मदद कर उनकी भी ईद खुशी से हो सके। यह ज़कात खासकर मुसलमान गरीबों, यतीम, मिस्कीन, विधवा महिलाओं, अनाथ बच्चों या किसी बीमार व कमजोर व्यक्ति को दी जाती है। ज़कात क़रीबी (रिश्तेदार,पड़ोसी,दोस्त) को भी दे सकते हैं। बस शर्त यह है, कि वह उसके हकदार हो यानी आर्थिक रूप से असक्षम या फिर उपर्युक्त।

महिलाओं या पुरुषों के पास अगर ज्वैलरी के रूप में भी कोई संपत्ति होती है तो उसकी कीमत के हिसाब से भी ज़कात दी जाती है। लेकिन जो लोग हैसियतमंद होते हुए भी अल्लाह की रजा में ज़कात नहीं देते हैं, वो गुनाहगारों में शुमार है।

किसे देनी होती है ज़कात: आमदनी से पूरे साल में जो बचत होती है, उसका 2.5 फीसदी हिस्सा किसी गरीब या जरूरतमंद को दिया जाता है, यानी अगर किसी मुसलमान के पास तमाम खर्च करने के बाद 100 रुपये बचते हैं तो उसमें से 2.5 रुपये किसी गरीब को देना जरूरी/फ़र्ज़ होता है।

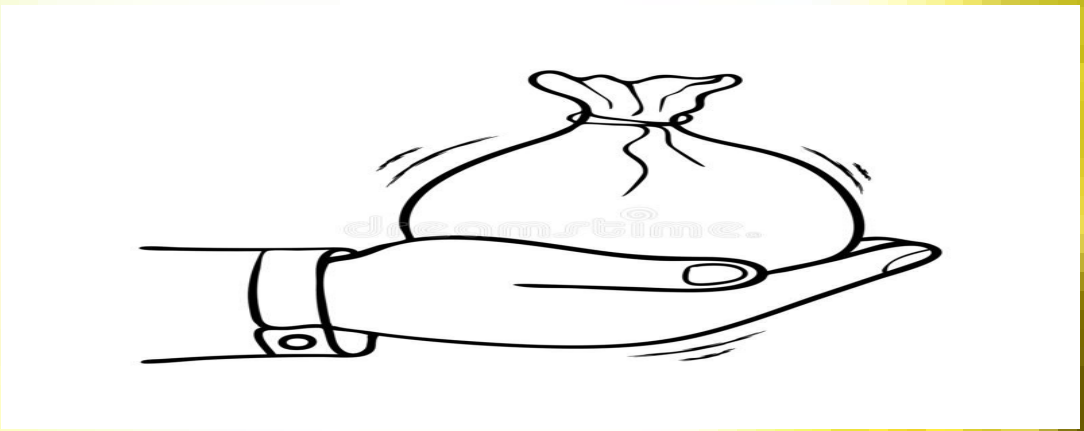

अगर परिवार में पांच सदस्य हैं और वे सभी नौकरी या किसी भी जायज़ जरिए पैसा कमाते हैं तो परिवार के सभी सदस्यों पर ज़कात देना फर्ज माना जाता है। मसलन, अगर कोई बेटा या बेटी भी नौकरी या कारोबार के जरिए पैसा कमाते हैं तो सिर्फ उनके मां-बाप अपनी कमाई पर ज़कात देकर नहीं बच सकते हैं, बल्कि कमाने वाले बेटे या बेटी को भी ज़कात देना फर्ज होता है।

ज़कात के बारे में पैगंबर मोहम्मद साहब ने फरमाया है, 'जो लोग रमजान के महीने में ज़कात नहीं देते हैं, उनके रोजे और इबादत कुबूल नहीं होती है, बल्कि धरती और जन्नत (Heaven) के बीच में ही रूक जाती है।

ज़कात और निसाब का संबंध : निसाब एक इस्लामिक शब्द है। इसका अर्थ होता है दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद और दैनिक आवश्यकता की चीजों को छोड़कर, अगर 52.2 तोला परिमाण की चांदी या 7.5 तोला सोना या इसके समकक्ष कोई व्यावसायिक वस्तु का मालिकाना हो तो उसे ज़कात का निसाब कहा जाता है।

धर्म के नियमों के अनुसार निसाब की मात्रा के बराबर संपत्ति अगर एक वर्ष से ज्यादा समय तक किसी व्यक्ति के पास है, तो उसे ज़कात देना होगा। मान लीजिये कि किसी व्यक्ति के पास 7.5 तोला से थोड़ा अधिक सोना है। अगर मान लें कि वह उस सोने को बाज़ार में 4

लाख रूपये में बेच सकता है तो यही निसाब परिमाण की राशि है। अब उसे इस निसाब के लिये ढाई फ़ीसदी के हिसाब से दस हजार रूपये की ज़कात राशि देनी होगी।

आसान भाषा में कहे तो हर हैसियतमंद मुस्लिम कमाने के लायक़ व्यक्ति के लिए ज़कात फ़र्ज़ है। अनिवार्य है।

****

भारत के संविधान का अनुच्छेद 343. संघ की राजभाषा--

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

2. खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था :

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

3. इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा

क. अंग्रेजी भाषा का, या

ख. अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

श्री शरद धनगर

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"क्या जाता है साथ में"

मेरा मेरा करते-करते
मन अपना भरता नहीं
धन-दौलत खेती-बाड़ी
अरे.....राख भी यहां बचती नहीं!

मनुष्य जीवन मिला
संसार आगे खींचते जाओ !
सुख-दुख आनंद से
अमृत कहकर पीते जाओ !

दिन जब बदलते हैं !
साथ में कोई बैठता नहीं !
क्या दोस्तों जिंदगी कैसी चल रही है !
कोई भी यहां पूछता नहीं !

कुबेर के पास बड़ा खजाना था !
साथ में कोई लेकर गया क्या?
मन से बोलता हूं दोस्तों.....
जिंदगी में कुछ बचता नहीं !

जिनको आना है उनको घर है !
जिनको जाना है उनको रास्ता है !
जमाना बहुत ही बुरा है दोस्तों.....
यह मार्ग सस्ता है !
पाप बहुत हो रहा है !
पुण्य कोई करता नहीं !
हाथ पैर काम करते नहीं !

खाने की समस्या हो गई !
वातानुकूलित गाड़ियों में घूमते थे,
विश्व पूरा घुमा तू, अभी गर्दन भी घूमती नहीं !

धन-दौलत बहुत कमाया !
साथ में कुछ आता नहीं !
बैंक-बैलेंस बहुत कमाया !
हाथ में अभी कुछ नहीं !
रावण का भी घमंड टूटा
फिर भी समझ में आता नहीं !
धन-दौलत खेती-बाड़ी
अरे.....राख भी यहां बचती नहीं!

****

श्री शरद धनगर

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

महंगाई: एक विश्लेषण

कोरोना समाप्ति के साथ, वैश्विक अर्थव्यवस्था को रूस का यूक्रेन पर आक्रमण के संकट को झेलना पड़ रहा है। नतीजतन, दुनिया भर में और भारत में भी मुद्रास्फीति बढ़ रही है। दालें, खाद्य तेल, सब्जियां, दूध, गेहूं और दैनिक जीवन के लिए आवश्यक अन्य वस्तुएं महंगी हैं। हर साल गर्मियों की शुरुआत के साथ, यह उम्मीद की जाती है कि सब्जियां या फल और अधिक महंगे हो जाएंगे। हालांकि, अनाज की कीमतें तब नहीं बढ़नी चाहिए जब अन्न भंडार भरे हों और रबी सीजन के दौरान रिकॉर्ड तोड़ बुवाई हो रही है उस समय कीमतें बढ़ने नहीं चाहिए, परन्तु ऐसा होता दिख नहीं रहा। आरबीआई के पहले के अनुमानों से मुद्रास्फीति बढ़ गई है, लेकिन आरबीआई ब्याज दरों को कृत्रिम रूप से कम रखने के लिए दृढ़ है। इस बात की आशंका थी कि रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष बढ़ जाएगा, कच्चा तेल और महंगा हो जाएगा और ईंधन की कीमतें आसमान छू जाएंगी। लेकिन सौभाग्य से, युद्ध के पहले सप्ताह में जिस दर से कच्चा तेल अधिक महंगा हुआ, वह स्थिर हो गया है।

खाद्यान्न और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के लिए मुद्रास्फीति प्रमुख कारकों में से एक है। इस मोर्चे पर अनुकूल घटनाक्रम को देखते हुए अगले कुछ दिनों में मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाया जाना चाहिए। जैसे-जैसे एक खाद्य पदार्थ की कीमत बढ़ती है, वैसे ही खाद्य पदार्थ समूह के अन्य वस्तुओं की कीमतें भी बढ़ती हैं। क्योंकि उपभोक्ता वहां विकल्प के तौर पर मुड़ने लगता है। दालों के साथ हमेशा ऐसा ही होता है।

वैश्विक स्थिति के वास्तविक परिणामस्वरूप कीमतों में वृद्धि हो रही है। यह खेल नया नहीं है, जो संभावित संकट का फायदा उठाने और समाज में भय पैदा करने के लिए है। बहुत सारे दलाल हैं जो इस तरह खेल खेलते हैं और उनकी ताकत बहुत बड़ी है। उदाहरण के लिए, सूजी, आटा, गेहूं और चावल की कीमतें बढ़ने का कोई कारण नहीं है। इन सभी के उत्पादन में भारत केवल आत्मनिर्भर ही नहीं, बल्कि देश भर में गोदामों की भरमार है। ऐसे में गेहूं और चावल के दाम क्यों बढ़े हैं, इसका पुख्ता जवाब किसी के पास नहीं है। हालांकि ईंधन में वृद्धि ही एकमात्र कारण है, जैसे गेहूं और चावल के दामों में चार-चार रुपये प्रति किलो की वृद्धि करनी पड़ी, वैसे ईंधन इतना महंगा नहीं हुआ है।

युद्ध से खाद्य तेल के आयात में बाधा आ सकती है, इस अनुमान के साथ केवल खाद्य तेल बाजार को बढ़ावा दिया है, खाद्य तेल आयात और भारत की अन्य देशों पर

निर्भरता पिछले कुछ वर्षों में एक प्रमुख सिरदर्द बन गई है, जिसके कारण युद्ध जैसी घटनाएं होते ही बढ़ते खाद्य तेल की कीमतों के कारण देश की गृहिणियों के मासिक बजट प्रभावित हो जाता है। खुदरा महंगाई के आठ महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंचकर लाखों मेहनतकश भारतीयों का जीवन एक बार फिर कठिन हो गया है।

****

भारत के संविधान का अनुच्छेद 344. राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति-

1. राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

2. आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को--

(क) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग,

(ख) संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों,

(ग) अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,

(घ) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,

(ङ) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।

3. खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

4. एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

5. समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1)के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

6. अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा।

श्री रवि कुमार
लेखापरीक्षक

समय के साथ बुढ़ापे की लाठी

लाठी का शाब्दिक अर्थ मजबूत डंडा या छड़ी होता है। लाठी का अर्थ सहारा है जो जरूरत के समय काम आए या जरूरत के समय साथ हो और सहारा प्रदान करे। लाठी की जरूरत उसे अनुभव होती है जो स्वयं चलने में असमर्थ है। बुढ़ापे की लाठी संतान को माना जाता है जो माता-पिता का उस समय सहारा बने जब वे बृद्ध हो गए हों और उन पर आश्रित हों। संतान का यह कर्तव्य है कि वे अपने माता-पिता की सेवा करें तथा उनका सम्मान करें। संतान को उनके आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए ।

माता-पिता भगवान के दिए हुए सबसे अनमोल उपहार है। माता-पिता का स्थान हर व्यक्ति के जीवन में भगवान से भी पहले आता है और यह पूजनीय है। माता-पिता का प्यार निस्वार्थ होता है और वह हमारी खुशियों के लिए अपनी खुशियों को त्याग देते हैं। बच्चे चाहे कितने भी बड़े हो जाएं पर वह माँ बाप के लिए हमेशा छोटे ही रहते हैं। दुनिया का कोई भी रिश्ता झूठा हो सकता है लेकिन माता-पिता का रिश्ता हमेशा सच्चा होता है। माता-पिता हमेशा अपने बच्चों को सफल करने में अपनी ज़िन्दगी लगा देते है और उनकी जरूरतें पूरी करने के लिए दिन रात कार्य करते हैं और हर मुसीबत को हमारे तक आने से पहले ही रोक देते हैं। माता-पिता का अपने बच्चों के साथ एक पवित्र रिश्ता होता है। सिर्फ माता-पिता ही होते हैं जो हमें जीवन देते हैं और अच्छे संस्कारों से सींचते हैं। हमारे जन्म से लेकर उनकी मृत्यु तक वह हर कदम पर हमारे साथ होते हैं। वह हमें संस्कार देकर इस समाज में रहने योग्य बनाते हैं और हमारा सही मार्गदर्शन करते हैं। माता-पिता की ममता और त्याग का कर्ज हम कभी नहीं चुका सकते हैं।

अपना समाज समय के साथ काफी तेजी से विकास कर रहा है परन्तु मॉडर्न पीढ़ी के बच्चे समय के साथ अपने माता-पिता से दूर होते जा रहे है, वे उनके द्वारा किए गए त्यागों को भूलते जा रहे है जो माता-पिता अपने बच्चों के लिए अपनी ज़िन्दगी की सारी खुशियों की कुर्बानी हँसते-हँसते दे दिया करते थे, आज उन्हीं बच्चों के पास अपने माता -पिता के लिए समय तो दूर की बात है उनका हालचाल पूछने के लिए वक़्त नहीं हैं। जिस बच्चे की एक छींक पर माँ की जान मुँह को आ जाया करती थी वहीं बच्चा आज अपनी बूढी माँ की तबियत ख़राब होने पर नज़र चुरा कर चला जाता है। हालत ऐसा ही रहा तो कैसे कोई अपने बच्चे को

भविष्य की बुढ़ापे की लाठी बोलेगा। अपने ही बच्चे माँ -बाप की तकलीफ में साथ छोड़ दे रहे है। मुझे तो तरस आता है उन बच्चों पर जो अपने माता -पिता के साथ ऐसा व्यवहार करते है वे खुद नहीं जानते कि वो कितनी बड़ी गलती कर रहे है। जिन माता-पिता ने अपने बच्चों के लिए अपने जीवन भर की कमाई उसकी देखभाल, पढ़ाई, सफलता आदि चीजों में खर्च कर दिए, आज वही बच्चे अपनी छोटी सी बचत के लिए अपने माता-पिता का अच्छे से इलाज नहीं करवाते है, ना अच्छा पोषक आहार देते है और ना कोई जरुरत की वस्तुएँ देते है। कुछ बच्चे तो शादी के बंधन में बंधने के बाद माँ -बाप से ऐसे मुँह मोड़ लेते है जैसे मानो वे उन्हें पहचानते ही नहीं है। ये दुर्भाग्य है कि हमारे समाज में जहाँ माँ -बाप के बूढ़े होने पर उन्हें वृद्धा आश्रम भेज दिया जाता है। आज हालात ऐसे हो गए है कि सरकार को बूढ़े माँ -बाप को रखने और उसकी देखभाल करने के लिए कानून बनाने पड़ रहे है। बच्चे भूल जाते है वे आज जैसा व्यवहार अपने माता -पिता के साथ करेंगे कल वैसा ही उनके बच्चे उनके साथ व्यवहार करेंगे तब शायद उनको समझ में आयेगा कि बुढ़ापे में बच्चे की सहयोग की कितनी जरुरत होती है। इसी वजह से आज बुढ़ापे की लाठी के मायने बदलते जा रहे है, एक ऐसा समय भी था जब बच्चे अपने माता -पिता की सेवा को सर्वोपरि मानते थे लेकिन समय के साथ मायने बदलते गए लोगों के विचार एवं उनके व्यवहार मे परिवर्तन आता गया। आज के परिवेश मे रिश्ते छूटते जा रहे है ।

बाजार में बड़ी आसानी से मिल जाता है, सब कुछ,

लेकिन ना तो माँ जैसी जन्नत मिलती है ,

और न ही बाप जैसा साया।

हमें भी उन्हें खुश रखने की कोशिश करनी चाहिए। आधुनिक समय में लोग माता-पिता के महत्व को भूलते जा रहे हैं और उनसे सही तरीके से बात भी नहीं करते हैं। बच्चे बड़े होकर माँ बाप का प्यार भूल जाते हैं और उन्हें वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं जो बहुत गलत है।

माता-पिता का निरादर भगवान के निरादर के समान हैं। हमें अपने माता-पिता का कहना मानना चाहिए और उन्हें खुश रखना चाहिए। माता-पिता अद्वितीय है उनके समान दुनिया में कोई भी नहीं है। हमें हमेशा अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए क्योंकि वह जीवन में सिर्फ एक ही बार मिलते हैं।

****

अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगाः

परंतु जब तक राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

अनुच्छेद 346. एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा--

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी: परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

श्री हरीश कुमार
आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

कंप्यूटर का महत्व

कंप्यूटर मानव जाति के लिए विज्ञान का एक अद्भुत उपहार है। कंप्यूटर आधुनिक युग के सबसे महत्वपूर्ण आविष्कारों में से एक है। आधुनिक युग को कंप्यूटर युग भी कहा जाता है। पहला कंप्यूटर एक यांत्रिक कंप्यूटर था, जो चार्ल्स बैबेज द्वारा बनाया गया था। कंप्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक गणना मशीन है। यह बहुत ही सरल डेटा आधारित मशीन है। यह विभिन्न कार्यों को तेज़ी से और अधिक सटीक रूप से निष्पादित करता है।

इसका उपयोग किसी भी प्रकार के काम को संपन्न करने के लिए किया जा सकता है। यह पेंट टूल, टेक्स्ट टूल इत्यादि की सुविधा प्रदान करता है जो हमारे लिए बहुत ही फायदेमंद हैं। यह हमें पहले से संग्रहीत डेटा में परिवर्तन करने के साथ-साथ नये डेटा को सुरक्षित करने की अनुमति देता है और हम इसमें एक साथ बहुत सारा डेटा एकत्रित कर सकते है। इसमें कोई भी जानकारी को सुरक्षित करने के लिये हम कीबोर्ड का उपयोग करते है तथा आउटपुट के लिये हम प्रिंटर आदि कई यंत्रों का उपयोग कर सकते है। कंप्यूटर में कई सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर होते है जिनकी सहायता से यह अच्छी तरह काम करता है। सी पी यू को हम कंप्यूटर का दिमाग कहते है।

कंप्यूटर के 2 मुख्य भाग हैं:

1. सॉफ्टवेयर

सॉफ्टवेयर कंप्यूटर के वे भाग होते है, जिन भागों को हम अपने हाथों से छू नहीं सकते केवल देख सकते है और हम उस पर कार्य भी कर सकते हैं। सॉफ्टवेयर का निर्माण कंप्यूटर पर कार्य को आसान बनाने के लिये किया जाता है। आजकल हम हमारे काम के आधार पर सॉफ्टवेयर का निर्माण कर सकते है, जैसा काम वैसा ही सॉफ्टवेयर होता है। सॉफ्टवेयर को बडी-बडी कंपनियों में उपयोगकर्ता की जरूरत को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। इसमें से सॉफ्टवेयर बिना किसी शुल्क के उपलब्ध होते है तथा कुछ के लिये हमें पैसे चुकाने पड़ते है।

जैसे हमें फोटो से संबंधित कार्य करना हो तो उसके लिये फोटोशॉप सॉफ्टवेयर या कोई वीडियो देखना हो तो हम उसके लिये मीडिया प्लेयर का उपयोग कर सकते है। सॉफ्टवेयर के दो भाग होते है- सिस्टम सॉफ्टवेयर, एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर।

2. हार्डवेयर

कंप्यूटर विभिन्न प्रोग्रामों का समूह होता हैं, जिसके द्वारा विशिष्ट कार्यों को किया जा सकता हैं। हार्डवेयर कंप्यूटर के ऐसे भाग होते है, जिन्हें हम छु सकते है। हार्डवेयर एक निश्चित कार्य करते है, जिसके लिए उन्हें निर्माण किया जाता है जैसे- कीबोर्ड, माउस, मॉनीटर, सी पी यू, प्रिंटर, प्रोजेक्टर इत्यादि।

कंप्यूटर के द्वारा हम सभी प्रकार के बिल जमा कर सकते है। शॉपिंग मॉल में या ऑनलाइन खरीदारी कर सकते है। ईमेल, मैसेजिंग कर सकते है। विडियो चैट आदि सभी कार्य दुनिया के किसी भी जगह से कर सकते है। आज हम सभी बैंकों में कंप्यूटर के माध्यम से सारे कार्य आसानी से कर सकते है। कंप्यूटर का उपयोग रेलवे और हवाई अड्डों में किया जाता है। आरक्षण लेने और आरक्षण रद्द करने में भी इसका उपयोग किया जाता है। यह ट्रेनों के साथ-साथ हवाई जहाज के आगमन और प्रस्थान को नियंत्रित करता है। प्रिंटिंग बुक और न्यूज पेपर में कंप्यूटर ज्यादा आवश्यक हैं।

बड़े शहरों में सड़कों के यातायात के नियम भी कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित किये जाते है। अपराधियों के रिकॉर्ड रखने के लिए भी पुलिस कंप्यूटर का उपयोग करती है।कंप्यूटर का इस्तेमाल खातों, स्टॉक, चालान और पेरोल इत्यादि को बनाए रखने के लिए व्यावसायिक रूप में किया जाता है। अस्पताल में रोगियों के चिकित्सा इतिहास और विशेष रूप से सर्जरी और पैथोलॉजी के रिकॉर्ड रखने के लिए कंप्यूटर का उपयोग किया जाता हैं। बैंकों में, यह वित्तीय लेनदेन के रिकॉर्ड रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मौसम के पूर्वानुमान के लिये भी कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। आज कंप्यूटर ने हमारे जीवन और काम को बहुत आसान बना दिया है। यह सच है कि कंप्यूटर आधुनिक तकनीक का एक बहुत बड़ा आविष्कार है।

कंप्यूटर का महत्त्व

1. कार्यस्थल में कंप्यूटर का महत्व - पुराने समय में हम सारे काम अपने हाथ से करते थे लेकिन आज कंप्यूटर की सहायता से खातों के प्रबंधन, डेटाबेस बनाने, आवश्यक जानकारी संग्रहीत करने जैसे विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। कंप्यूटर ने पारंपरिक विकल्पों के लिए मार्ग प्रशस्त किया है क्योंकि यह अधिक सुरक्षित और कुशल भी है। यह निश्चित रूप से लोगों के लिए एक लाभ साबित हुआ है। कंप्यूटर की

इंटरनेट से कनेक्ट होने के साथ, इसकी उपयोगिता में काफी वृद्धि हुई है। ऐसे कई कार्यालय हैं जिनके काम पूरी तरह से इंटरनेट के माध्यम से किए जाते हैं।

इस प्रकार वे अपने दैनिक कार्यों को पूरा करने के लिए कंप्यूटर और इंटरनेट पर बहुत भरोसा करते हैं। कंप्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से कई वित्तीय लेनदेन भी संभव हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि आज हमारा जीवन केवल इन दोनों चीजों से घिरा हुआ हैं।

2. मनोरंजन में कंप्यूटर का महत्व- आजकल कंप्यूटरों को लैपटॉप और अन्य विकल्पों जैसे टैबलेट इत्यादि के साथ प्रतिस्थापित किया गया है क्योंकि ये हल्के वजन वाले होते हैं, उन्हें अपने साथ कही भी ले जाना काफी आसान होता है। इस प्रकार कंप्यूटर की मदद से आप फिल्में देख सकते हैं, गाने सुन सकते हैं, वीडियो का आनंद ले सकते हैं और अपनी पसंद का काम कर सकते हैं। यहां तक कि आप यात्रा करते समय भी, आपके पास इन सभी चीजों का उपयोग कर सकते है।

यदि आप अपने लैपटॉप को इंटरनेट से कनेक्ट करते हैं तो आप ऑनलाइन मनोरंजन जैसे लाइव मनोरंजन का आनंद ले सकते हैं, गाने डाउनलोड कर सकते हैं, वीडियो देख सकते हैं और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। इस प्रकार कंप्यूटर मनोरंजन प्रदान करता है और यह एक ऐसा माध्यम है जिसने हमारे जीवन को बिल्कुल बदल दिया है।

3. शिक्षा में कंप्यूटर का महत्व- कंप्यूटर न केवल बच्चों के लिए बल्कि शिक्षकों के लिए भी उपयोगी हैं। एक तरफ, जहां कंप्यूटर बच्चों की पढ़ाई में मदद कर सकते हैं, उसी तरह शिक्षकों की प्रस्तुतियों को भी आसानी से तैयार करने में शिक्षकों की मदद करता है और इस प्रकार बच्चों को एक नया शिक्षण अनुभव का लाभ मिलता है।

सीखने की प्रक्रिया कंप्यूटर के माध्यम से बढ़ती जा रही है और अब बच्चों को व्यस्त रखना आसान है। इंटरनेट के माध्यम से दस्तावेज़ और टेस्ट पेपर तैयार करना भी आसन हो गया है। अब लगभग सभी राज्यों में ऑनलाइन एडमिशन शुरू हो गया है जिसकी वजह से भ्रष्टाचार कम हुआ है। तो शिक्षा के क्षेत्र में, कंप्यूटर छात्रों की समग्र शिक्षण पद्धति और सीखने के अनुभव में सुधार करने में एक भूमिका निभा रहे हैं।

4. दैनिक जीवन में कंप्यूटर का महत्व- आज हर किसी के घर में एक कंप्यूटर या लैपटॉप होता है जिसका उपयोग वे व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए करते हैं। यह खेल खेलने या अन्य गतिविधियों की पूर्ति के लिए भी हो सकता है। यहां तक कि बच्चे अपने घर में रखे कंप्यूटर के माध्यम से आगे बढ़ रहे हैं और नई-नई चीजें सीख रहे हैं। यह निश्चित रूप से एक महान कदम है, क्योंकि आगे बढ़ने के लिए कंप्यूटरों का ज्ञान आवश्यक है और यदि किसी को सीखने का मौका मिलता है, तो इससे कुछ भी बेहतर नहीं हो सकता है।

इस प्रकार उपर्युक्त जानकारी से यह बहुत स्पष्ट है कि कंप्यूटर हर किसी के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया हैं। यह न केवल आपको मनोरंजन प्रदान करता है बल्कि आपके काम को भी पूरा करता है।

****

अनुच्छेद 350 क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं--
प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश--
संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

सेवानिवृत्ति

श्री एस डी केलकर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी अपनी सेवा पूर्ण करने के पश्चात दिनांक 30 अप्रैल, 2022 को अधिवर्षिता पर सेवानिवृत हुए

सेवानिवृत्ति

श्री आर. आर. लोंढे, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी अपनी सेवा पूर्ण करने के पश्चात दिनांक 31 मई, 2022 को अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए

आपके पत्र

E-No - 367676/2022/Admn/38/05/22

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
JHARKHAND, RANCHI - 834002

सत्यमेव जयते

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2022-23/ 03

दिनांक/Date 13/04/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल,
बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
बांद्रा(पूर्व), मुंबई - 400 051

विषय- त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें अंक की पावती का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें अंक** की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित "ऑडिट - एक कहानी", "पानी के तीन गुण और जीवन से संबंधित संदेश", "भारतीय समाज में हिंदी", "उच्च शिक्षित गुड़िया की रुकी हुई शादी", "महिला सशक्तिकरण", "शहीद भगत सिंह", तथा "राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधन" आदि रचनाएँ अत्यंत ही उच्च श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)-1, महाराष्ट्र, मुंबई -400020
Office of the Principal Accountant General (Audit)-I, Maharashtra, Mumbai-400020

सं.रा.अ./ले.प.-1/बा.प/243 | 58

दिनांक: 24.05.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई
सी.25 ऑडिट भवन, 8 वां तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्पलेक्स, मुंबई - 400051

विषय – "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" पत्रिका के आठवें अंक की प्राप्ति।

आपके कार्यालय से दिनांक 08.04.2022 को **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" पत्रिका के आठवें अंक** की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाकारों की रचनाएँ शिक्षाप्रद, मनोहारी एवं रुचिकर है। **"चंद्रयान", "भारतीय समाज में हिन्दी"** तथा **"अनमोल आंखें"** आदि उत्कृष्ट है तथा पत्रिका के मुख्य पृष्ठ की साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका के कुशल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को एवं रचनाकारों को इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएं।

भवदीय

24/5/22

हिन्दी अधिकारी

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/०९ **दिनांकः- ०९ /5/2022**

0 9 MAY 2022

सेवा में,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई-400051

विषयः हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें संस्करण के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें संस्करण की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत मनमोहक और आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं वो हैं - भारतीय समाज में हिन्दी, उच्च शिक्षित गुड़िया की रुकी हुई शादी, चंद्रयान, महिला सशक्तिकरण आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई / Office of the Director General of Commercial Audit, Mumbai
आवक क्र. No. 263
दि. Dt. 13/5/22

भवदीय,

ग्रु. अधिकारी 06/05/22

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

विद्या

दूरभाष Telephone- 2223251, 2225766, 2224812

सत्यमेव जयते

फैक्स / Fax 0612-2225977
तार / Tele Gram | ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हि०अ०/ले० व ह०/05/प०प्र०/2022-23/ 18
दिनांक 10 /05/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
C-25, ऑडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा, मुंबई-400051

विषय :- **तिमाही हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानदेय' का 8 वां अंक के प्रेषण के संबंध में।**

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 08.04.2022 के द्वारा हिन्दी तिमाही पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानदेय' का 8 वां अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका के सभी रचनाएँ पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई / Office of the Director General of Commercial Audit
276
दि. Dt. 17/5/22

भवदीय,

अरुण 10/05/2022

हिंदी अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

विद्या 17/5/22

आपके पत्र

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं0 हि0क0 / ले0 व ह0 / पत्रिका समीक्षा / 2022–23 /12 दिनांक :– 04/05/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी–25, आडिट भवन, 8वॉं तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा,
मुंबई–400051

विषय : तिमाही हिंदी ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय 'के आठवें सरंकरण का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई--पत्रिका ' लेखापरीक्षा ज्ञानोदय ' के आठवें सरंकरण की ई–प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

कार्यालय प्र. महालेखाकार(लेखा व हक.) पंजाब व यू.टी. चण्डीगढ।
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A & E), PUNJAB & U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स 0172-2703110 दू.भा - 2702272,2702072
क्रमांक:-हिंदी कक्ष/समीक्षा/4-10/2022-23/27
दिनांक:- 21/04/2022

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी हिंदी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यक लेखापरीक्षा, मुंबई,
सी-25,ऑडिट भवन,8 तल,बांद्रा कुर्ला काम्प्लेक्स बांद्रा,मुंबई -400051 ।

विषय - विभागीय पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 8वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' का नवीन अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

श्री आनंद कुमार सिंह जी की 'भारतीय समाज में हिंदी', श्री शरद धनकर की 'उच्च शिक्षित गुडिया की रुकी हुई शादी', श्री हरीश कुमार की 'चंद्रयान', 'महिला सशक्तिकरण ', रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय परिवार को बधाई। पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ ।

भवदीया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),बिहार,पटना

पत्रांक -:हि.अ./ले.प./प्रतिभाव/37/22-23/09 दिनांक-: .04.2022

सेवा में ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक ,वाणिज्यिक लेखापरीक्षा ,मुंबई
C-25,ऑडिट भवन ,8 वां तल ,बांद्रा कुर्ला कॉम्पलेक्स,बांद्रा ,मुम्बई -400051

विषय -: तिमाही हिंदी ई -पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"के आठवें अंक का प्रतिभाव ।

महोदय ,

आपके कार्यालय की तिमाही हिंदी ई -पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"के आठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई ,एतदर्थ बधाई एवं धन्यवाद । पत्रिका के इस अंक में विविध विषयों पर केन्द्रित ज्ञानवर्धक और पठनीय रचनाओं को संकलित किया गया है ।पत्रिका की साज-सज्जा भी आकर्षक है।

पत्रिका के इस अंक में संकलित हिंदी भाषा की व्यापक सम्पर्क क्षमता और इसकी सांस्कृतिक विशेषताओं पर केन्द्रित श्री आनंद कुमार सिंह रचित 'भारतीय समाज में हिंदी' और भारत के पहले अन्तरिक्ष यान की गौरवपूर्ण उपलब्धि पर केन्द्रित श्री हरीश कुमार रचित 'चन्द्रयान' विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय हैं । इसके अतिरिक्त 'महिला सशक्तिकरण', 'रंगों का त्यौहार:होली' , 'शहीद भगत सिंह' शीर्षक आलेख भी उत्कृष्ट हैं ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार -प्रसार के अभियान को "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रही है,इसका भविष्य और उज्जवल हो ,इसी कामना के साथ समस्त पत्रिका परिवार को पुनः बधाई एवं शुभकामनायें ।

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई / Director General of Commercial Audit
आवक क्र. No. 191
दि. Dt. 29/4/22

भवदीय

21/04/22

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एंव पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यलय, बेंगलोर-560001

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU -560001.

सं.हि.प्रशा.-2022-23/ 10 **दिनांक-** 20.04.2022

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी कक्ष,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी - 25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
बांद्रा(पूर्व), मुंबई - 400051

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी त्रैमासिक ई - पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानदेय' के 8 वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय,

20/4

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)असम ,बेलतला ,गुवाहाटी-781029
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), ASSAM, BELTOLA, GUWAHATI–29

सं. हि.प्र./ले.प./प.पा./खंड-I/2021-22/17

दिनांक: 12.04.2022

12 APR 2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई - 400 051

विषय: - आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के आठवें संस्करण की पावती।

महोदया/महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** का आठवां संस्करण प्राप्त हुआ। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीया,

मौसमी
12/04/22

हिंदी अधिकारी

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/ 2
दिनांक: 12**.04.2022**

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्पलेक्स,
बांद्रा, मुंबई-400 051

विषय: **तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के आठवें संस्करण का प्रेषण।**

महोदय,

आपके पत्र संख्या डीजीसीए/प्रशा./हिंदी पत्रिका/18 दिनांक 08.04.2022 द्वारा कार्यालय की तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के आठवें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर हैं। 'ऑडिट-एक कहानी', 'अनमोल आंखें', 'पानी के तीन गुण और जीवन से संबंधित संदेश', 'भारतीय समाज में हिंदी', 'चंद्रयान', 'महिला सशक्तिरण' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रेरणादायक हैं। रचनाओं के चयन में संपादक मंडल की कुशलता एवं साहित्यिक समझ सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा / Director General of Commercial Audit
आवक क्र. No. 144
दि. Dt. 22/4/2022

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

आपके पत्र

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं प्रनिलेप(के)/हिंदी अनुभाग/14-02/2022-23/08 दिनांक:11.04.2022

सेवा में ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक,
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, बांद्रा
मुंबई- 400 051

विषय : हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के आठवें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** का आठवां अंक इस कार्यालय को ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई । धन्यवाद ।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं । सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक है विशेषतः श्री सरोज प्रजापति कृत **"अनमोल आँखे"** ज्ञानवर्धक, श्री आनंद कुमार सिंह कृत **"भारतीय समाज में हिंदी में"** प्रेरक, एवं श्री शरद धनगर कृत **"उच्च शिक्षित गुड़िया की रुकी हुई शादी"** विचारात्मक हैं ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र,नागपुर 440001

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र. ....

दिनांक:- /03/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई, महाराष्ट्र -400051

विषय :हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 8 वें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 8 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद !

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री सरोज प्रजापति, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'अनमोल आँखें', श्री शरद धनगर, लेखापरीक्षक का लेख 'उच्च शिक्षित गुड़िया की रुकी हुई शादी ' तथा श्री हरीश कुमार, आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक का लेख 'चंद्रयान' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं | पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

PADMALATA S. SARMA, SAO(CO-ORD)-PSS, COORD

(श्रीमती पी.एस.सर्मा)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग

आपके पत्र

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), UTTARAKHAND

पत्रांक:26/हि0प्र0/2022–23/विभागीय पत्रिकाएं/पावती/61 दिनांक 04.05.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई – 400051

विषयः–हिन्दी ई–पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई–पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का आठवां वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखाधिकारी/ हिंदी प्रकोष्ठ

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय - महालेखाकार (लेप.-I), ओडिशा, भुवनेश्वर
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), ODISHA, BHUBANESWAR

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2022-23/27 दिनांक- 27.05.2022

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन
कार्यालय - महानिदेशक (वाणिज्यिक लेखापरीक्षा)
मुंबई - 400 051

विषयः - हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 8वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 8वें अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका की साज-सज्जा मनोरम है । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियाँ, कविताएँ पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं विशेषत: **ऑडिट-एक कहानी, अनमोल आँखें, भारतीय समाज में हिंदी, चंद्रयान एवं महिला सशक्तिकरण** सराहनीय हैं । कार्यालयीन गतिविधियों के चित्रों ने पत्रिका को और निखारने का कार्य किया है । सुश्री कंचन कुमारी द्वारा प्रस्तुत हस्तचित्र मनमोहक है ।

पत्रिका के संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की अबाधित प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / हिंदी

आपके पत्र

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KARNATAKA, BENGALURU

सं.हिं.क./रा.भा./2022-23/26 दिनांक: 20.04.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई

विषय: त्रैमासिक हिंदी गृहपत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें अंक की पावती प्रेषण ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी गृहपत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका की साज-सज्जा सराहनीय है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की हैं । विशेष रूप से श्री सरोज प्रजापति का लेख "अनमोल आँखें", श्री शरद धनगर का लेख "उच्च शिक्षित गुड़िया की रुकी हुई शादी" एवं "महिला सशक्तिकरण" पर लेख प्रशंसनीय है ।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्कमता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी ।

सधन्यवाद !

भवदीया,

ह/-
वरिष्ठ लेखा धिकारी/हिंदी कक्ष

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23/6 दिनांक-22.04.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स(पूर्व),
मुंबई - 400051
ईमेल- pdcamumbai@cag.gov.in , admin.mum.pdca@cag.gov.in

विषय- ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के **8वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** का **8वाँ** अंक प्राप्त हुआ , एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है । इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री इमरान खाटीक , वरि. लेखापरीक्षक	हाय रे थर्टी फर्स्ट
2.	श्री सरोज प्रजापति, सहा. लेखापरीक्षाअधिकारी	पानी के गुण और जीवन से संबंधित संदेश
3.	श्री शरद धनगर , लेखापरीक्षक	उच्च शिक्षित गुड़िया की रुकी हुई शादी

इसके अतिरिक्त सुश्री **कंचन कुमारी**, सुपुत्री श्री राजाराम , लेखापरीक्षक की चित्रकारी भी बहुत अच्छी लगी ।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/23
दिनांक: 19.04.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा,
मुंबई – 400 051

विषय : कार्यालयीन तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें अंक की पावती।

महोदय,

पत्र क्रमांकःडीजीसीए/प्रशा./हिंदी पत्रिका/18 दिनांक:08.04.2022 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के आठवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है। विशेष रूप 'ऑडिट एक कहानी', 'अनमोल आँखें', एवं 'पानी के तीन गुण और जीवन से संबंधित संदेश' अत्यंत पठणीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनांए।

भवदीय,

19/04/2022
वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (ले० व ह०) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
टेलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172–2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/32
दिनांक: 29.04.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशा.),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखा परीक्षा,
मुंबई ।

महोदय,

विषय : तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 08वें अंक के सम्बन्ध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 08.04.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 08वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्रीमती स्वपना फुलपाडिया का लेख 'ऑडिट- एक कहानी', श्री आनंद कुमार सिंह का लेख 'भारतीय समाज में हिंदी', श्री हरीश कुमार का लेख 'चंद्रयान' एवं श्री शरद धनगर का लेख 'उच्च शिक्षित गुड़िया की रुकी हुई शादी' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी

राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यासंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यासंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालयाव्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यासंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालयाव्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	